संगठन बहुत श्रेष्ठ था। [illegible]

२ रोम का लीजन
(The Roman Legion)

यूनानियों की ही भाँति रोम वालों की सेना में भी स्वतन्त्र नागरिक ही होते थे। यह नागरिक किसी भी आर्थिक उद्देश्य से सेना में भर्ती नहीं होते थे।* यह सैनिक सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। इस प्रकार निर्मित और प्रेरित सेनाओं का मनोबल स्वभावतः बहुत अच्छा होता है।

संगठन—रोम की सेना में आयु के आधार पर निम्नलिखित चार प्रकार के सैनिक होते थे—

(१) **वीलाइट्स** (Velites अर्थात् नवयुवक सैनिक), (२) **हस्ताती** (Hastati या जवान), (३) **प्रिंसाइप्स** (Principes अथवा प्रौढ़) तथा (४) **ट्रायरी** (Triari अर्थात् वृद्ध सैनिक)।

अन्तिम तीन प्रकार के सैनिक **मैनिपलों** (Maniples, जिनकी तुलना आधुनिक पैदल सेना की कम्पनियों से की जा सकती है) में संगठित किये जाते थे। प्रत्येक मैनिपल में १०० सैनिक होते थे। प्रत्येक मैनिपल के साथ ४० वीलाइट्स भी होते थे। इस प्रकार मैनिपलों में सैनिकों की कुल संख्या १४० होती थी। ५ मैनिपल की **कोहार्ट** (Cohort) तथा ६ कोहार्ट की एक **लीजन** (Legion) थी।

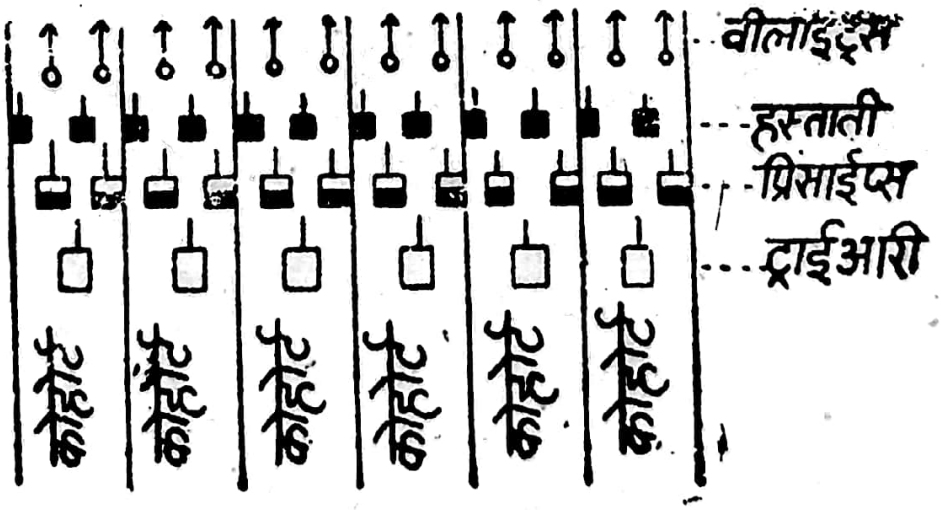

चित्र ३—रोमन लीजन

रोम के लम्बे इतिहास में उपरोक्त वर्णित मैनिपलों में सैनिकों की संख्या तथा

---

* 'नागरिकों के लिये सैनिक सेवा अनिवार्य थी परन्तु कुल देशवासियों के बहुत छोटे से भाग को ही नागरिकता का दर्जा प्राप्त था। शेष जनता प्रायः इन नागरिकों के दास होते थे। इन्हें सेना में भर्ती नहीं किया जाता था।

Scanned by CamScanner

लीजन में कोहार्टों की संख्या सदा एक-सी नहीं रही। उदाहरणस्वरूप एक अन्य विवरण के अनुसार प्रत्येक लीजन १० कोहार्टों में विभक्त होता था। प्रत्येक कोहार्ट में एक हस्ताती सैनिकों वाली मैनिपल, एक १२० प्रिन्साइप्स सैनिकों वाली मैनिपल तथा एक ६० ट्रायरी सैनिकों की मैनिपल होती थी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कोहार्ट में १२० वीलाइट (अर्थात् हल्के पैदल सैनिक) भी होते थे, परन्तु यह पृथक् मैनिपलों में संगठित नहीं होते थे। इस प्रकार इस विवरण के अनुसार भी लीजन में पैदल सैनिकों की कुल संख्या ४२०० होती थी।

परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि मूल रूप से लीजन को सम-संख्या वाली इकाइयों तथा उप-इकाइयों में संगठित किया जाता था।

सामरिक नियोजन—मैनिपलों को तीन समान्तर पंक्तियों वाली शतरंजी विरचना में खड़ा किया जाता था। जिसमें पीछे वाले मैनिपल आगे वाली मैनिपलों के बीच के रिक्त स्थानों का प्रयोग कर आगे बढ़कर शत्रु से लड़ सकती थी। सैनिकों के बीच में पाँच फीट का अन्तर होता था।

शस्त्र तथा सामरिकी—वीलाइट एक तलवार, कई हल्के भाले और ढाल रखते थे। वे लोहे के टोप पहनते थे। अन्य तीन प्रकार के सैनिक पूरी तरह कवच पहिने हुए होते थे और दो छोटे भाले (Pilum), एक दुधारी तलवार (Gladius) और एक ढाल रखते थे। भालों को शत्रु पर फेंककर मारा जाता था। यह कहा जाता है कि लड़ाई में रोम के लोग सदैव आक्रमणात्मक कार्यवाही करते थे। उनका आक्रमण इस प्रकार होता था कि पहले तो वीलाइट्स आगे जाकर छोटी-छोटी टुकड़ियों में शत्रु पर बड़ी तेजी से आक्रमण करते थे और जब शत्रु की मुख्य सेना उनके निकट आ जाती थी, तो पीछे हट जाते थे। उसके बाद हस्ताती अपने कमांडरों की आज्ञानुसार क्रम से शत्रु पर अपने भालों से प्रहार करने के लिये आगे दौड़ते थे और जब यह सारे छोटे भाले फेंक दिये जाते थे, तब लीजन आगे बढ़ता था और शत्रु से मुठभेड़ की लड़ाई आरम्भ हो जाती थी। जब हस्ताती बहुत थक जाते थे तो प्रिन्साइप्स 'हस्तातियों' की मैनिपलों के बीच से होकर आगे बढ़ते थे और लड़ाई जारी रखते थे। ट्रायरी रिजर्व (Reserve) में रखे जाते थे, उनसे आवश्यकता के समय काम लिया जाता था। इस रोमन लीजन ने यूनानी फैलेन्क्स और दूसरी सेनाओं को पराजित किया।

रोम वालों का अनुशासन, प्रशिक्षण और ड्रिल बहुत ऊँचे दर्जे का था। इस ही कारण रोम वाले संग्राम भूमि में अपेक्षाकृत जटिल विरचनाओं को भी बनाये रखते थे। इनकी सामरिकी में मुठभेड़ और दूर से मार करना दोनों ही बातें थीं और इनके कार्य प्रतिरक्षात्मक और आक्रमणात्मक दोनों ही प्रकार के होते थे।

सैनिक संगठन में श्रेष्ठता के कारण एक तो पूरे इटली में रोमवासियों का प्रभुत्व हो गया। दूसरे वह यूनानियों को जीत सके और तीसरे वह सभ्य संसार की दौड़ में कारथेज सभ्यता को हटाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सके। उन्होंने एक

Scanned by CamScanner

विशाल साम्राज्य स्थापित किया। इस प्रकार रोम अपने श्रेष्ठ आयुध (योधनसंभार) से इस योग्य हो सका कि वह अनेक शताब्दियों तक विश्व के रंगमंच पर अपने विकास और अस्तित्व को बनाये रख सका और मनुष्य जाति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे पाया।

लीजन का पतन

(१) आक्रमणात्मक की अपेक्षा प्रतिरक्षात्मक नीति—लीजन की सफलता उसके श्रेष्ठ संगठन, अनुशासन, प्रशिक्षण एवं मनोबल के साथ उसके द्वारा अपनाये जाने वाली आक्रमणकारी समर नीति पर आधारित थी। परन्तु दूसरी शती ई० में, जब साम्राज्य विस्तार का युग समाप्त हो गया तो लीजन प्रतिरक्षात्मक समर नीति अपनाने लगे। आघात सामरिकी पर आधारित मुठभेड़ की लड़ाइयाँ बहुत कम लड़ी जाने लगीं। पूरी सेना सीमाओं पर उनकी रक्षा हेतु तैनात की जाने लगी। यह स्वाभाविक ही था कि इस प्रकार तैनात सेना केवल प्रतिरक्षात्मक उपायों और समर-नीति को बल देती। आक्रामक स्त्रातेजी और सामरिकी का पूर्णतः परित्याग सेना के रण-कौशल पर हमेशा बुरा प्रभाव डालता है। आर्थर बिर्नी के शब्दों में, "कुछ समय उपरान्त ही रोमन लीजन अधःपतित होकर मुख्यतः पुलिस के कर्त्तव्यों को पूरा करने वाले सशस्त्र सिपाहियों के दल सदृश्य हो गये।"[1]

(२) रोमन सेना में अन्य जातियों की भर्ती—हम जानते हैं कि प्रारम्भ में लीजन केवल अनिवार्य पद्धति से भर्ती किये गये रोम के स्वतन्त्र नागरिकों से निर्मित होते थे। साम्राज्य काल में भी अनिवार्य भर्ती का नियम सिद्धान्त रूप में माना जाता रहा परन्तु यह लोकप्रिय न होने के कारण पूरी तरह लागू नहीं किया जाता था। इसलिये अब रोमन सेना ऐच्छिक भर्ती होने वाली सुदीर्घ समय तक सेवा करने वाले वेतन भोगी सैनिकों से निर्मित होने लगी। फिर भी क्योंकि लीजन में केवल रोमन नागरिक ही भर्ती हो सकते थे इसलिये इसमें शुरू में रोमन तत्व की ही प्रधानता रही। लेकिन लीजन तो अब पूरी साम्राज्यिक सेना का आधा भाग मात्र था। शेषांश जीते हुए राज्यों से भर्ती किये गये सहायक सैन्य दलों का था। इस प्रकार समस्त अश्वारोही दल, गोफन चलाने वाले (Slingers) तथा धनुषधारी सेना के इसी भाग से सम्बद्ध थे।

धीरे-धीरे रोमन तत्व लीजन से भी विलुप्त होने लगा। रोमवासी आमोद-प्रमोद में समय बिताने लगे और आराम-पसन्द हो गये। उनके हृदय में सैनिक जीवन के प्रति घोर अरुचि होने लगी। तीसरी शती ई० तक केवल अफसर रोमन रहे, शेष पदों पर वैदेशिक बर्बर जातियों के लोग नियुक्त किये जाने लगे। इस परिवर्तन के निम्नलिखित बुरे प्रभाव पड़े—

मनोबल एवं अनुशासन का ह्रास—स्वतन्त्र रोमन नागरिकों से निर्मित लीजनों

Scanned by CamScanner

में बहुत ऊँचे दर्जे का उत्साह, साहस एवं अनुशासन रहता था। सैनिकों में देश-भक्ति की भावना होती थी। परन्तु पेशेवर वैदेशिक बर्बर जातियों के सैनिकों में न तो अनुशासन ही था और न ही स्वतन्त्र नागरिकों जैसी संघ-भक्ति (Espirit de Corps) ही थी।

(३) **परम्परागत युद्ध-विधि का परित्याग**—इसके साथ ही अब लीजनों ने अपनी परम्परागत युद्ध-विधि का परित्याग कर अपने असभ्य शत्रुओं के हथियार, सामरिकी आदि को अपना लिया। पाँचवीं सदी तक लीजन की विरचना (Formation) उतनी ही लुप्त-प्रयोग हो गई जितनी फैलेन्क्स की हुई थी।

(४) **अश्वारोही सेना की प्रधानता**—जो बर्बर-जन रोमन सेना में भर्ती हुए थे, वे मुख्यतः अश्वारोही सैनिक थे और धीरे-धीरे उन्होंने अपने युद्ध करने के तरीकों को रोमन सेनाध्यक्षों पर थोप दिया। इस प्रकार लीजन जिसका मुख्य लड़ाकू अंग पैदल सेना थी, और भी कम महत्व की वस्तु रह गई।

पराक्रम युग पर टिप्पणी :

इस विस्तृत काल के आयुधों के विकास का इतिहास पढ़कर हमें निम्नलिखित शिक्षायें मिलती हैं—

(१) इस युग में हमें सबसे पहली शिक्षा यह मिलती है कि जनरल फुलर का यह सिद्धान्त कि युद्ध में जीत ९९ प्रतिशत श्रेष्ठ यन्त्रों और हथियारों पर आधारित होती है गलत है। क्योंकि हम देखते हैं कि ईरानी सेना को यूनानी सेना ने जो पराजित किया वह श्रेष्ठ हथियारों के आधार पर नहीं अपितु श्रेष्ठ 'आयुध' अथवा योधनसंभार के आधार पर। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हथियार आयुध (योधनसंभार) का केवल एक अंग है। यूनानी योधनसंभार निम्नलिखित दो कारणों से श्रेष्ठ थी—

(क) **कवच**—यूनानी पैदल सेना पूर्णतः कवच-युक्त थी जबकि ईरानी पैदल सेना के कुछ ही भाग पर कवच होता था।

(ख) **संगठन**—यूनानी इसलिये भी जीते क्योंकि उनका संगठन ईरानियों की अपेक्षा अधिक अच्छा था।

श्रेष्ठ अनुशासन के कारण श्रेष्ठ संगठन स्थापित किया जा सका था। यूरोप में ये पहला ही अवसर था जबकि स्वतन्त्र नागरिकों ने उचित रूप से संगठित विरचनाओं के रूप में संग्राम भूमि पर कदम रखा था।

(२) मनोबल के महत्व का स्पष्ट परिचय मिल गया। यूनानियों और रोम वालों के हौंसले अपने विरोधियों की अपेक्षा बहुत अधिक श्रेष्ठ थे और जब रोम के सैनिकों का मनोबल गिरने लगा तब रोम की सेना (लीजन) का प्रभाव भी घटने लगा।

(३) यह स्पष्ट हो गया कि संगठन लचकदार और इस प्रकार का होना चाहिये कि उससे प्रारक्षित सेनाओं (reserve forces) का उचित प्रयोग किया जा

Scanned by CamScanner

सके। इस प्रकार ईरानियों की भाँति किसी भी प्रकार के संगठन के न होने से तो यूनानियों की भांति कैसा भी संगठन का होना श्रेष्ठ है और किसी प्रकार के संगठन की अपेक्षा रोम वालों की भाँति उपयुक्त संगठनों का होना श्रेष्ठ होता है।

(४) युद्ध जीतने के लिये वीरता एक महत्वपूर्ण गुण था। परन्तु व्यक्तिगत पराक्रम की अपेक्षा सामूहिक और संगठित पराक्रम का अधिक महत्व था। पराक्रम आगे आने वाले युगों के युद्धों में भी महत्वपूर्ण रहा है। इसलिये इस युग को अन्य युगों से अलग करने वाली सैनिक विशेषता पराक्रम न होकर संगठन ही है। इस युग के पूर्व शायद किसी प्रकार का कोई संगठन नहीं होता था और इस युग के बाद बहुत ढीले प्रकार का संगठन होता था।

(५) यह एक बहुत रोचक बात है कि ममफोर्ड के अनुसार "इस युग के इस प्रकार के सैनिक संगठनों से यह आदत बन गई कि मशीन की भाँति कार्य किया जाये। इस आदत से यूरोप में मशीन के युग के आने की आधारशिला रक्खी गई। इसका उदाहरण मैकेडोनिया के फैलेंक्स की आक्रमण करने की पद्धति और इसका एक साथ मार्च करना है।"[१]

Scanned by CamScanner